सूर्य ग्रह की पौराणिक कथा

ब्रह्मा जी के मानस पुत्र मरीचि ऋषि हैं, मरीचि जी के पुत्र सप्त ऋषियों (वशिष्ठ ऋषि, अत्रि ऋषि, कश्यप ऋषि, जमदग्नि ऋषि, गौतम ऋषि, विश्वामित्र ऋषि और भारद्वाज ऋषि) में कश्यप ऋषि हैं। कश्यप जी का विवाह संस्कार दक्ष प्रजापति की तेरह कन्याओं के साथ हुआ, जिनमें अदिति से देवताओं का जन्म हुआ, दिति से दैत्यों का जन्म हुआ, दनु से दानवों का जन्म हुआ और खस से राक्षसों का जन्म हुआ आदि। दैत्यों, दानवों और राक्षसों ने एक साथ संगठित होकर देवताओं को पराजित कर उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया तथा उनके सभी अधिकार भी छीन लिए, जिससे सभी देवता बहुत दुःखी हुए। अपने पुत्रों को इस प्रकार दुःखी देखकर उनकी माता अदिति भी बहुत दुःखी हुई, इसलिए अदिति ने भगवान सूर्य नारायण से देवताओं की रक्षा हेतु उन्हें पुत्र रूप में प्राप्त करने के लिए कठिन तप और प्रार्थना की, अदिति की प्रार्थना से प्रसन्न होकर भगवान सूर्य अपने हजारवें अंश से अदिति और कश्यप के घर जन्में, इसी कारण इन्हें आदित्य भी कहा गया है, कहीं यह भी लिखा है कि ब्रह्मा जी ने सृष्टि के आरंभ (आदि) में सबसे पहले सूर्य को उत्पन्न किया इसलिए भी सूर्य को आदित्य कहते हैं और सृष्टि उत्पन्न करने वाले ग्रह होने के कारण इनका एक नाम सविता भी है, सूर्य ने अपने भाईयों (देवताओं) की सेना का संचालन किया और दैत्यों आदि को हराकर देवताओं को विजय दिलायी। आगे चलकर सूर्य का विवाह संज्ञा (शरायु), राज्ञी और प्रभा के साथ हुआ। कई अन्य मतानुसार सूर्य की पत्नियों के नाम प्रभा, छाया, उषा, प्रत्युषा और निक्षुभा आदि हैं। संज्ञा से जुड़वा संतानें यम (मृत्यु के देवता यमराज) और यमी (यमुना नदी) का जन्म हुआ। संज्ञा अपने पति सूर्य से बहुत अधिक प्रेम करती थीं पर वह सूर्य का तेज अधिक दिनों तक सहन न कर सकीं और अपनी जगह अपनी छाया को छोड़कर एक सुन्दर घोड़ी का रूप धारण कर तपस्या में लीन हो गईं। सूर्य छाया को न पहचान सके, छाया और सूर्य से दो संतानें हुईं, शनिश्चर और मनु, छाया का लगाव केवल

अपने दो बच्चों (शनिश्चर और मनु) के प्रति था, इस अन्तर को देखकर यम जो न्याय के देवता भी हैं, इस पक्षपाति व्यवहार को सहन न कर सके और अपनी विमाता का विरोध किया, जिसके कारण उन्हें अपनी विमाता से शापित भी होना पड़ा। यम ने अपनी आप बीती अपने पिता सूर्य को स्पष्ट बता दी, सूर्य ने यम को शाप मुक्त कर दिया और इस भेदभाव का कारण जानना चाहा, जिसके लिए सूर्य ने क्रूरता पूर्ण छाया से कारण पूछा, और सत्य का पता लगने पर बहुत दुःखी हुए। सूर्य अपने ससुर (विश्वकर्मा) के पास गए और अपनी विवशता बताई, तब विश्वकर्मा जी ने उनका तेज कुछ कम किया और उसके बाद सूर्य अपनी पत्नी संज्ञा से मिलने गए, आगे चलकर फिर संज्ञा से सूर्य को जुड़वा संतानों अश्विनी कुमारों (देवताओं के चिकित्सक) की प्राप्ति हुई।

सूर्य ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

कठिन तप और प्रार्थना से सूर्य की कृपा की प्राप्ति हो सकती है, सूर्य अपने तेज के कारण क्रूर अवश्य है पर पापी नही है, तेज के कारण पत्नी से अलग होना, पर सत्य का पता चलते ही अपनी विवशता प्रकट करना, इसी सूर्य के तेज के कारण जातक को विवाह और संतान जैसे संबंधों को बनाए रखनें में कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है, इसी तेज के कारण सूर्य के समीप आते ही सभी ग्रह अस्त हो जाते हैं। सूर्य ने देवताओं की सेनाओं का संचालन किया और दैत्यों आदि से देवताओं को विजय दिलाकर अपनी संचालन क्षमता का प्रमाण दिया। जन्म पत्रिका में सूर्य की अवस्था देखकर बताया जा सकता है कि जातक शत्रुओं पर विजयी होगा या शत्रुओं से पराजित होगा। इसी कारण सूर्य यश का भी कारक ग्रह माना गया है।

सूर्य स्वभाव से क्रूर (कठोर) ग्रह माना जाता है, पर पापी ग्रह नही होता। सूर्य एक दिन में 1° चलता है, और लगभग 30 दिनों तक एक ही राशि में रहता है। सूर्य आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार सूर्य उत्पन्न करता, पालन करता और संहार करता है,

इसीलिए सूर्य नौ ग्रहों में प्रमुख ग्रह है। समय की गणना भी सूर्य से ही होती है। इसलिए हिन्दू पंचांग में सूर्य से बनने वाले 12 माह होते हैं जैसेः-

क्रम संख्या	हिन्दी माह के नाम	अंग्रेजी माह के नाम	सूर्य राशि
1	चैत्र	14 मार्च से 13 अप्रैल तक	मीन
2	वैशाख	14 अप्रैल से 13 मई तक	मेष
3	ज्येष्ठ	14 मई से 14 जून तक	वृष
4	आषाढ़	15 जून से 15 जुलाई तक	मिथुन
5	श्रावण	16 जुलाई से 15 अगस्त तक	कर्क
6	भाद्रपद	16 अगस्त से 15 सितम्बर तक	सिंह
7	आश्विन	16 सितम्बर से 16 अक्टूबर तक	कन्या
8	कार्तिक	17 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक	तुला
9	मार्गशीर्ष	16 नवम्बर से 15 दिसम्बर तक	वृश्चिक
10	पौष	16 दिसम्बर से 13 जनवरी तक	धनु
11	माघ	14 जनवरी से 12 फरवरी तक	मकर
12	फाल्गुन	13 फरवरी से 13 मार्च तक	कुम्भ

सूर्य सभी नौ ग्रहों में राजा कहा जाता है और सभी ग्रह, नक्षत्र, और राशियां सूर्य के ही चारों ओर घूमते हैं। सूर्य ही जन्म पत्रिका में पिता का कारक है। यदि जन्म पत्रिका में सूर्य पीड़ित हों तो इसका सीधा असर पिता और जातक के स्वास्थ्य पर पड़ता है और पितृदोष होने की सम्भावना भी बढ़ जाती है। राजा होने के कारण यह अपनी बात मनवाने में सफल भी हो जाता है, जिसके कारण जातक में अभिमान और घमंड़ जैसे लक्षण भी दिखाई देतें हैं, एक कारण यह भी है कि सूर्य अग्नि तत्व के साथ एक क्रूर ग्रह भी है, ऋतुओं में परिवर्तन का एक बड़ा कारण सूर्य ही है।

सूर्य ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैंः-

1	कारक	आत्मा, पिता
2	संबंध	पिता
3	स्वभाव	क्रूर
4	गोत्र	कश्यप
5	दिन	रविवार
6	वाहन	सात घोड़े वाला रथ
7	रंग	लाल (ताँबा)
8	दिशा	पूर्व
9	गुण (प्रकृति)	सतोगुण
10	लिंग	पुरूष
11	वर्ण (जाति)	क्षत्रिय
12	तत्व	अग्नि
13	स्वाद	तीक्ष्ण, कटु (कड़वापन)
14	धातु	सोना, तांबा
15	ऋतु	ग्रीष्म ऋतु
16	दृष्टि विशेष	7 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	गेहूं
18	शारीरिक अंग	सिर, नेत्र, हड्डी
19	अन्न दान	गेहूं, गुड़
20	द्रव्य दान	घी
21	विंशोत्तरी महादशा	6 वर्ष
22	जप संख्या	7,000
23	रत्न	माणिक्य, (संस्कृत में पद्मराग)
24	उपरत्न	रक्तमणि, लालतुर्मली, सूर्यकान्त मणि, ताम मणि

25	सहचरी	सुवर्णा और छाया
26	चरादि	स्थिर
27	समिधा	अर्क (आक)
28	सूर्य के मित्र ग्रह	चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति
29	सूर्य के सम ग्रह	बुध
30	सूर्य के शत्रु ग्रह	शुक्र, शनि, राहु, केतु
31	उच्च राशि	मेष (0° से 10° तक)
32	नीच राशि	तुला (0° से 10° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	सिंह (0° से 20° तक)
34	स्वग्रही राशि	सिंह (21° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	सिंह
36	नक्षत्र स्वामी	कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
37	सूर्य के आधी देवता	अग्नि
38	सूर्य के प्रत्यधि देवता	भगवान शिव (ईश्वर)
39	सूर्य ग्रह का कद	मध्यम (सामान्य)
40	सूर्य ग्रह शुष्काादि में	शुष्क ग्रह